International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, January-June 2017, Submitted in April 2017, iajesm2014@gmail.com

# भारतीय संस्कृति की सभ्यता

मनीषा व्यास, शोधार्थी (संस्कृत), जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)
डॉ किरण गुप्ता, प्रोफेसर (संस्कृत), जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

## सार

भारत के मूल्य भारतीय संस्कृति को एक ठोस आधार प्रदान करते हैं। पिछले पाँच हज़ार वर्षों के दौरान व्यापक प्रभावों के अधीन होने के बाद, भारतीय संस्कृति विकसित हुई है। इसके अलावा, इसने पिछली सभ्यताओं से प्राप्त तत्वों को संरक्षित, आत्मसात और अवशोषित किया है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता की सफलता का रहस्य है। यह संभव है कि हड़प्पा सभ्यता, जिसके बाद आर्य सभ्यता आई, जो एक ग्रामीण सभ्यता थी, का पता 2800 ईसा पूर्व में लगाया जा सकता है। भारतीय संस्कृति के इतिहास में. भारतीय संस्कृति यूनानियों, शक, कुषाण, हूणों और प्राचीन गुप्त और मौर्य सभ्यताओं के विदेशी आक्रमणों से प्रभावित रही है; आठवीं या नौवीं शताब्दी में सल्तनत पर अरब आक्रमण; मध्यकालीन काल के दौरान महान मुगलों की भारतीय मुस्लिम सभ्यता का उच्च उत्कर्ष और आधुनिक काल में ब्रिटिश शासन के दौरान पश्चिमी प्रभाव की पूरी ताकत । इस अवशोषण और एकीकरण के कई उदाहरण हैं, जिनमें से कुछ देश के अंदर मौजूद विविध जीवनशैली, कला, वास्तुकला और धर्म हैं। ग्रीक शैली का बौद्ध विषयों पर महत्वपूर्ण प्रभाव था, और कला और भवन निर्माण का गांधार स्कूल इस प्रभाव का सबसे अच्छा उदाहरण है।

## परिचय

भारत के विशिष्ट इलाके और ऐतिहासिक विरासत, जो सिंधु घाटी सभ्यता तक फैली हुई है और वैदिक और बौद्ध काल के साथ–साथ स्वर्ण युग की शुरुआत और अंत के दौरान विकसित हुई थी, ने देश की समृद्ध संस्कृति में योगदान दिया है। भारत के लम्बे अतीत ने भी भारत की संस्कृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा, यह उन देशों की सांस्कृतिक परंपराओं, धार्मिक मान्यताओं और अन्य पहलुओं को अवशोषित करता है जिनकी सीमाएँ इसकी सीमा पर हैं।

अपनी संस्कृतियों, बोलियों, रीति–रिवाजों और रीति–रिवाजों के माध्यम से, भारत उस विशाल विविधता की एक विशिष्ट तस्वीर पेश करता है जिसे इस देश ने पिछले पांच सहस्राब्दियों के दौरान अन्य लोगों के साथ अपनी बातचीत में अनुभव किया है। सिंधी धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म ऐसी कुछ धार्मिक परंपराएँ हैं जिनकी उत्पत्ति भारत में हुई। सनातन धर्म भी भारत में जन्मी धार्मिक परंपराओं में से एक है।

## भारतीय सभ्यता की संस्कृति

विभिन्न कोणों से देखने पर, भारतीय संस्कृति संपूर्ण विश्व के इतिहास के लिए असाधारण रूप से आवश्यक है। इसे दुनिया की पहली सभ्यताओं में से एक माना जाता है। कार्य की अवधारणा भारतीय संस्कृति के केंद्र में है। मोहनजोदड़ो की खोज के बाद के वर्षों में, इसे मेसोपोटामिया और मिस्र की प्राचीन सभ्यताओं के साथ–साथ एक समकालीन सभ्यता माना जाने लगा है। तथ्य यह है कि यह ऐतिहासिक है, इसकी कई विशेषताओं में से केवल एक है; दूसरी बात यह है कि यह चिरस्थायी था। चीनी संस्कृति को छोड़कर, अन्य सभी प्राचीन सभ्यताएँ समय की धुंध में खो गई हैं, और अपनी भव्यता की गवाही देने के लिए केवल कुछ ढहते अवशेष छोड़ गए हैं।

इन नियमों का एकमात्र अपवाद चीनी संस्कृति है। मेसोपोटामिया की सुमेरियन, असीरियन, बेबीलोनियाई और चाल्डियन संस्कृतियाँ, साथ ही मिस्र, ईरान, ग्रीस और रोम की संस्कृतियाँ, सभी सभ्यताओं के उदाहरण हैं जो इस श्रेणी में आती हैं। क्या आप उम्र बढ़ने के भयानक परिणामों के अनुभव के बावजूद भारतीय संस्कृति सहस्राब्दियों से कायम हैं। उनके कौशल का तीसरा क्षेत्र पूरे ग्रह का गुरु बनना है। उन्हें न केवल भारत के विशाल विस्तार में सभ्यता लाने का श्रेय दिया जाता है, बल्कि उन्हें प्रशांत महासागर से लेकर साइबेरिया, मेडागास्कर, ईरान के सिंहल (श्रीलंका) तक के क्षेत्र में रहने वाली कई जंगली जनजातियों में भी सभ्यता लाने का श्रेय दिया जाता है।

## भूगोल का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव

भारत की संस्कृति और इसके विशिष्ट परिदृश्य के बीच एक संबंध है। भौगोलिक दृष्टि से भारत एक प्रायद्वीप है जो पांच अलग–अलग प्रभागों में विभाजित है, जो इस प्रकार हैंरू

हिमालय पर्वत श्रृंखला, जो उत्तरी भारत में स्थित अधिकांश पर्वतों का समूह है।

1. सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के उत्तर में मैदान, जो उत्तरी क्षेत्र में स्थित हैं
2. मध्य भारतीय क्षेत्र का पठार
3. तटीय क्षेत्रों के अतिरिक्त दक्षिण भारतीय पठार भी सम्मिलित है।

इन भौगोलिक विशेषताओं का संगीत, नृत्य, वास्तुकला और कला परंपराओं सहित भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर प्रभाव पड़ता है। विंध्य के दक्षिण क्षेत्र में विशिष्ट द्रविड़ सभ्यता का उदय हुआ, जो

उत्तर में पाई जाने वाली आर्य संस्कृति से भिन्न है। भारत की संस्कृति का दक्षिण–पूर्व एशिया और एशिया सहित दुनिया भर में कई अलग–अलग स्थानों पर प्रभाव पड़ा है.।

**संगीत**

कर्नाटक संगीत, जो दक्षिण भारत से उत्पन्न होता है, और हिंदुस्तानी संगीत, जो उत्तर भारत से उत्पन्न होता है, शास्त्रीय भारतीय संगीत के दो रूप हैं। बंगाल से बाउल, गुजरात से लावणी और राजस्थान से रुदाली जैसे लोक संगीत के उदाहरण मिलना संभव है। एक अन्य प्रकार के संगीत को रवीन्द्र संगीत कहा जाता है, और इसे बंगाली संगीत के रूप में भी जाना जाता है। ग़ज़ल, भजन, भक्तिगीत और कव्वाली अन्य प्रकार के संगीत हैं जो इनके अतिरिक्त उपलब्ध हैं। लोकप्रिय संगीत को फ़िल्मी गीत के रूप में जाना जाता है, जो उस संगीत को संदर्भित करता है जिसका उपयोग भारतीय फिल्म उद्योग में किया जाता है।

**भारतीय संस्कृति का विकास एवं उसके द्वारा व्यवहारों की सम्पूर्णता**

प्रकृति नदी के स्वछन्द, स्वतन्त्र प्रांगण में हुआ है। ऋषियों ने गुरूकुलों की स्थापना कर तथा भारतीय जन जीवन को चार भागों चार आश्रमों में विभक्त कर ऐसी जीवन पद्धति को जन्म दिया जो अविवर्चनीय है। संस्कृति सीखे हुए व्यवहारों की सम्पूर्णता है । मानव द्वारा अप्रभावित प्राकृतिक शक्तियों को छोड़कर जितनी भी मानवीय परिस्थितियां हमें चारों और से प्रभावित करती है । संस्कृति एवं संस्कार हमारे जीवन को उज्ज्वल बनाने की कला है ।

सर्वप्रथम वायु पुराण में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष विषयक मानवीय घटनाओं को संस्कृति के अन्तर्गत समाहित किया गया । इसका तात्पर्य यह है कि मानव जीवन के दिन प्रतिदिन के आचार विचार जीवन शैली तथा कार्य व्यवहार सभी संस्कृति के अन्तर्गत आते है । सामान्तः संस्कृति द्विपक्षीय होती है–

1. बाह्य पक्ष
2. आन्तरिक पक्ष

बाह्य पक्ष आन्तरिक पक्ष का आईना न होकर सिर्फ उससे सबंधित होता है। हमारे बाह्य, आचार विचार हमारी मनोवृतियों को प्रतिबिंबित करते है। संस्कृति का मूल आधार मानवता को माना जाता है । परन्तु देश विदेश के नाम से भी इसे जाना जाता है। जैसे भारतीय संस्कृति, ईरानी संस्कृति, पश्चिमी संस्कृति आदि संस्कृति का एक ही मूल उद्देश्य यह है कि संस्कृति देश की उपज होती है, उसका संबंध देश के भौतिक वातावरण और उसमें पालित, पोषित एवं परिवर्द्धित विचारों से होता है ।

संस्कृति का बाह्य अंग होने के साथ साथ ही जातीय मनोवृति का परिचायक होती है अर्थात् भिन्न भिन्न जातियों की अपनी भिन्न भिन्न भाषा होती है। मनुष्य का रहन सहन, पहनावा आदि सभी कारक जातीय परिस्थिति देश के वातावरण और देश की भावानाओं से संबंधित होता है। जमीन पर बैठना, हाथ से खाना, लम्बे व सभ्य कपड़े पहनना सभी कुछ संस्कृति एवं देश के वातावरण के अनुसार होता है । जो आवश्यकताओं तथा आदर्शो का मूर्त रूप देते है।

**भारतीय संस्कृति में सोलह संस्कार**

जीवन का एक ध्यये निश्चित किया गया और उस तक पहुँचने के लिए अनेक साधनों का आविष्कार भी किया गया । संस्कार भी इसी प्रकार का एक साधन है। इसमें मानव जीवन आधार को दो भागों में बांटा गया। एक तो वह जिसको लेकर मनुष्य उत्पन्न होता है । दूसरा वह जिसका संचय वह अपने वर्तमान जीवन में परिस्थितियों के अनुकूल करता है। शास्त्रकारों का मत है कि नवजात शिशु का मस्तिष्क कोरी पट्टी के समान नहीं है जिस पर बिलकुल नया लेख लिखना है, इसके विरूद्ध इस पर उसके अनेक पूर्ण जन्मों के संस्कार अंकित है। साथ ही साथ उनका यह भी विश्वास है कि नवीन संस्कारों द्वारा पुराने संस्कारों को प्रभावित उनमें परिवर्तन, परिवर्धन और उनका उन्मूलन भी किया जा सकता है । प्रतिकूल संस्कारों का विनाश और अनुकूलन संस्कारों का निर्माण ही जीवन को परिस्थितियों के अनुकूल करता है। मनुष्य तथा अदृश्य आध्यात्मिक शक्तियों के बीच माध्यम के रूप में संस्कारों के कई तत्वों का विकास हुआ, ऐसा विश्वास था कि ये शक्तियां मानव जीवन में हस्तक्षेप तथा उनको प्रभावित करती है। अतः विविध अवसरों पर उनके अनुकूल प्रभावों को निमन्त्रण देना आवश्यक समझा जाता था । किन्तु एक ओर जहां मनुष्य का ध्यान अतिमानुषिक शक्तियों की तरफ आकृष्ट होता था वहीं दूसरी ओर जीवनकला के अपने ज्ञान का उपयोग वह स्वतः भी करता है ।

**जन्म से पूर्व एवं पश्चात के संस्कारों का वैज्ञानिक आधार**

भारतीय संस्कृति व हिन्दू धर्म में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। संसार की सभी वस्तुएँ संस्कारों द्वारा सम्पन्न होकर ही पूर्णता को प्राप्त करती है । मानव जैसा श्रेष्ठ प्राणी भी माता के गर्भ से पूर्ण मनुष्य रूप में उत्पन्न हो या उसे किसी संस्कार की आवश्यकता ही न हो यह बात असम्भव है । अतः मनुष्य की जन्म जात कमियों को दूर करके सभ्य समाज के लायक मनुष्य बनाने के लिए संस्कारों की आवश्यकता

ISSN -2393-8048, January-June 2017, Submitted in April 2017, iajesm2014@gmail.com
होती है व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में संस्कारों की अहम् भूमिका होती है । गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक संस्कारों से शरीर व मन की शुद्धि के साथ भावी जीवन की आधारशीला तैयार होती है।

भारतीय साहित्य में अभिमन्यु प्रहलाद् विवेकानन्द कि कथाएँ इसका उदाहरण है ९ मनोविज्ञान एवं चिकित्सा शास्त्र यह मानता है कि स्त्री पुरूष जिस भाव से मिलते है जैसा आहार विहार करते है, गर्भ पर वैसा ही प्रभाव पड़ता है । आधुनिक विज्ञान भी इस बात के महत्त्व को स्वीकारता है । गर्भावस्था से पूर्व उत्तम गर्भ के लिये प्रार्थना की जाती है । मनुस्मृति, सुश्रुत संहिता एवं बृहदारण्यकोनिषद् में भी इसका उल्लेख मिलता है। वर्तमान समय में इस संस्कार की प्रभावशीलता को समझते हुए अनेक संघ व संस्थाओं ने भी इस दिशा में कार्य करना प्रारम्भ किया है । दैनिक भास्कर के समाचारों के अनुसार आरएसएस की स्वास्थ्य इकाई आरोग्य भारती बच्चों को गर्भ में ही संस्कारवान् बनाने का दावा किया। उन्होंने कोलकाता में 8 मई 2016 को दो दिवसीय गर्भ संस्कार कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में डॉ. हितेशजानी ने कहा श्गर्भ संस्कार के माध्यम से जैनेटिक इंजीनियरिंग करके गर्भ में ही बच्चे को संस्कारी बनाया जा सकता है। कम बुद्धि वाले माता पिता भी बुद्धिमान संतान प्राप्त कर सकते है । इसके लिए आयुर्वेद व वैदिक गर्भ विज्ञान के नियमों का पालन करना होगा

**भारतीय संस्कारों की प्रणाली और स्वरूप**

भारतीय संस्कृति में संस्कारों की प्रणाली और स्वरूप, सामाजिक अनुभव पर आधारित है। प्राचीन काल से हिन्दू समाज में मनुष्य के व्यक्तित्व के समुत्थान के निमित्त संस्कारों का प्रतिपादन किया गया था । प्राचीन काल से ही मानव ने अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को सुव्यवस्थित करके पूर्णता की ओर ले जाने के लिए जिन रीतियों या संस्थागत व्यवस्थाओं को अपनाया, संस्कार उन्हीं में से एक है। जीवन में इसकी नियोजना इसलिए की गई कि मनुष्य का वैयक्तिक और सामाजिक विकास हो सके तथा उसका दैहिक और भौतिक जीवन सुव्यवस्थित ढंग से उन्नत हो सके। व्यक्ति के असंस्कृत स्वरूप को सुसंस्कृत और अनुशासित करने के निमित्त संस्कारों की अभिव्यक्ति की गई। अति प्राचीन काल में संस्कारों की पद्धतियां विस्तृत तथा विशिष्ट थी, जिनका उदय सुदूर निश्चित ही अतीत के अन्तराल में निहित है, किन्तु यह निश्चित है कि सामाजिक आवश्यकताओं के कारण संस्कारों का जन्म हुआ और कालक्रम से उन्हें धार्मिक अवतरण प्राप्त हो गया।

**उपसंहार**

हमारा जन–जीवन या दूसरे शब्दों में कहें तो भारतीय जन–जीवन संस्कारों से आबद्ध है। संस्कार व्यक्ति के परिष्कार के साथ–साथ उन्हें संगठित और अनुशासित करने के विविध उपाय हैं जिससे कि वह समाज में रहकर अपने दायित्वों की पूर्ति करते हुये सुखमय एवं निरोगी जीवन व्यतीत कर सकें। संस्कार धार्मिक एवं कर्मकाण्डीय कार्यों के रूप में जन्म से मरणोपरान्त संपादित होते हैं, जिनका उद्देश्य मात्र मानव की भौतिक एवं सांस्कृतिक उन्नति ही नहीं अपितु उसको विकारों से शुद्ध करना भी था। उल्लेखनीय है कि महात्मा बुद्ध भी अपनी देशना में आष्टांगिक मार्ग के माध्यम से व्यक्तिगत विकारों को दूर करने की विधियों को समाज के समक्ष रखते हैं। वस्तुतः हमारे ऋषि–मुनियों द्वारा प्रतिपादित संस्कार पूर्णतरू वैज्ञानिक हैं जिसके माध्यम से व्यक्ति के जन्मगत शारीरिक एवं मानसिक उच्छिष्ट को दूर किया जाता है। संस्कृति ही संस्कार का निर्माण करते हैं ये दोनों ही शब्द अन्योन्याश्रित है इसी कारण भारतीय समाज में संस्कारों की नींव रखी गयी है। प्रारंभ में अनेक धार्मिक क्रियाएँ भी इसमें सम्मिलित थीं। इसी कारण प्राचीन ग्रन्थों में इसकी संख्या अलग–अलग मिलती है। लेकिन कालान्तर में वैदिक संस्कारों को अलग कर मात्र दैहिक संस्कारों को नियमित एवं निश्चित कर सोलह की संख्या निर्धारित की गयी।

वस्तुतरू भारतीय मेधा जिसे तीन से चार हजार वर्ष पूर्व सिद्ध कर चुकी है, आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोग उस पर आज शोध कर निष्कर्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। हमारे संस्कार निर्माताओं का स्त्री–पुरुष शरीर विज्ञान एवं क्रिया पर साधिकार था। उन्होंने बालक एवं बालिका का जन्म ऋतुकाल के उपरान्त किन–किन दिवसों पर होता है इसकी जानकारी भी प्रस्तुत की। पुंसवन तथा सीमन्तोनयन द्वारा गर्भपात की आशंका को समाप्त किया जाता था, जिसके लिए प्राकृतिक वनस्पति से प्राप्त औषधियों अथवा रस को प्रशिक्षित वैद्य के हाथों शुभ मुहूर्त पर गर्भवती को प्रदान किया जाता था। आज भी प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो चुका है कि बरगद के पत्ती के डाल से अथवा छाल से निकलने वाले तत्व लेटेक्स में गर्भस्थापन की क्षमता होती है। जातकर्म द्वारा माता का सुरक्षित प्रसव तथा नामकरण द्वारा शिशु को विशेष पहचान दिया जाता था । निष्क्रमण के अवसर पर सूर्य की किरणों का स्पर्श हानिकारक सूक्ष्मजीवों को नष्ट करने के साथ–साथ शिशु को विटामिन–डी भी प्रदान करता जो अस्थि विकास के लिए उपयोगी माना जाता है। अन्नप्राशन के अवसर पर मधु तथा अन्य पौष्टिक खाद्यान्न का सेवन शिशु की रोग प्रतिरक्षा तंत्र को सशक्त बनाने के लिए कराया जाता है। आज विज्ञान स्वीकार कर चुका है कि मधु रोग–प्रतिरोधक क्षमता की वृद्धि में सहायक है। कर्णछेदन बालक को यौन रोगों से बचाता है तो यज्ञोपवीत संस्कार मूत्र सम्बन्धी विकार से शरीर को सुरक्षित रखता है। इसी प्रकार चौलकर्म का भी शारीरिक स्वच्छता की दृष्टि से महत्त्व है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

[1] अगिरस, रमाकान्त "भारतीय चेतना एवं चिन्तन रू हमारे संस्कार", आर्य प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 19
[2] आचार्य, त्रिदण्डी स्वामी, "गृहस्थाश्रम और विवाह संस्कार (कल्याण संस्कार अंक 2006) गीता प्रेस, गोरखपुर उ. प्र. पृ. स. 118
[3] आचार्य, श्री राम शर्मा, " यज्ञोपवीत संस्कार विवेचन (2005 ) ", अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, पृ. सं. 44
[4] अनिरूद्धाचर्या, (2006), "आर्य विवाह संस्कार के उद्देश्य और रहस्य
[5] आचार्य, श्रीराम शर्मा, "कर्मकाण्ड भास्कर – पुसवन संस्कार", युग निर्माण प्रेस ,2000, मथुरा पृ.सं. 130–139,157
[6] आचार्य, श्रीराम शर्मा, "संस्कारों की पुण्य परम्परा", (1993), अखण्ड ज्योति, संस्थान, मथुरा, पृ.सं. 15
[7] उपाध्याय, पं. श्री कृष्णानन्द, " षोडश संस्कारों में चूड़ाकरण का महत्त्व कल्याण, ( फरवरी 2006), गीताप्रेस गोरखपुर, उ. प्र., पृ. सं. 517, 527
[8] आर्य, अशोक, "वैदिक सोलह संस्कार", (2003), आर्य प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 203, 258
[9] उपाध्याय, रामजी, "भारत की सांस्कृतिक साधना", (1967), रामनारायण लाल वेणीमाधव, इलाहाबाद, पृ.सं. 20
[10] श्री अनिरूद्धाचर्या, स्वामी, "संस्कार अंक, आर्य विवाह संस्कार के उद्देश्य, (2006) गीता प्रेस गोरखपुर पृ. स. 114
[11] अनिरूद्धाचर्या, "आर्य विवाह संस्कार के उद्देश्य और रहस्य कल्याण, संस्कार अंक (2006), गीता प्रेस गोरखपुर उ. प्र. पृ. स. 115
[12] कांणे, पाण्डूरंगनामन, "धर्मशास्त्र का इतिहास(1963), हिन्दी संस्थान, लखनउ, पृ. सं. 268
[13] कुमार डॉ. जितेन्द्र, "संस्कार का अर्थ एवं उसकी उपादेयता कल्याण, संस्कार अंक (2006) गीता प्रसे गौरखपुर उ.प्रा. पृष्ठ सं. 174
[14] कुमार डॉ. जितेन्द्र, "संस्कार का अर्थ एवं उसकी उपादेयता कल्याण, संस्कार अंक (2006) गीता प्रसे गौरखपुर उ.प्रा. पृष्ठ सं. 173, 174,200 17-
[15] कुमार, डॉ. जितेन्द्र, "संस्कार का अर्थ एवं उसकी उपादेयता", कल्याण, संस्कार अंक (2006), गीताप्रेस गोरखपुर, पृ.सं. 174 एवं वीर मित्रोदय रू संस्कार भाष्य पृ.सं. 120
[16] कौशिक, पं. श्रीबालकृष्ण, "नामकरण संस्कार – शास्त्रीय अनुशीलन ( कल्याण, संस्कार अंक 2006 ) " गीताप्रेस, गोरखपुर, उ. प्र. पृ. सं. 297, 298, 299, 300
[17] राधेश्याम, "संस्कार से समन्वित दिनचर्या", कल्याण, संस्कार अंक (2006), गीताप्रेस, गोरखपुर, पृ.सं. 42
[18] गंगराड़े, डॉ. प्रकाशचन्द्र, "हिन्दुओं के रीति रिवाज एवं मान्यताएँ", हिन्दु धर्म में संस्कारों का महत्व क्यों ? (2005), हिन्दूलॉजी बुक्स, नई दिल्ली, पृ.सं. 30,34,36,41,45
[19] गोयल, डॉ. प्रीती प्रभा, भारतीय संस्कृति (2000) राजस्थान ग्रन्थागार, जोधपुर पृ. स. 72, 84
[20] गौतम, डॉ. चमनलाल, "मनुस्मृति", (2008), संस्कारी संस्थान, बरेली, पृ.सं. 226 23-
[21] गुलाबराय, बाबु, "भारतीय संस्कृति की रूपरेखा", (1998), ज्ञान गंगा प्रकाशन, इलाहाबाद पृ.सं. 13, 29